कवयित्री-परिचय :

नाम : कुमारी राधा

जनम-तिथि : 7.9.1936

जनम-अस्थान : जीवछपुर, सहरसा

सिच्छा : एम.ए (हिन्दी)

परकासित पुस्तक— 1. अधरतिया के बँसुरी (मगही कविता संगरह) 2. शकुन्तला (मगही महाकाव्य) 3. सरयू कछारों की हिरणी (हिन्दी कविता संगरह) 4. गुलमोहर के प्रस्न (हिन्दी कविता संगरह)

कुमारी राधा के कविता में बिरह आउ बेदना के एगो सास्वत धारा हे जे सुरू से अंत तक मौजूद रहऽ हे। 'अधरतिया के बँसुरी' में कोयल के कूक आउ पपीहा के हूक हे। एकरा में भोगल जथार्थ जम के फूलल-फलल हे। नायिका बँसुरी के धुन सुन के व्याकुल हो रहल हे। ओकरा लगऽ हे कि कोई ओकर टभकित घाव के आउ टभका रहल हे। बसंत के आगमन पर नायक से मिलेला ओकरा अन्दर आउ छटपटाहट पैदा कैले हे।

अधरतिया के बँसुरी

अइसन कनकन अधरतिया में
के बँसुरी बजा रहल हे?
हिरदा जगावे ला,
तप्पिस के मिंझावे ला–
क्रउन परदेसी
हमर मन लाल रंग में डुबा रहल हे,
हमरा ठगले जा रहल हे?

नीनो उपह गेल,
चानो ढरक गेल,

निरदइया अइसन तान छेड़ले हे कि
देहिया में उखी-बिखी लगा देलक

केकर नेहिया झुरा रहल हे,
केकर सनेहिया फुला रहल हे?
ओह!
रसे-रसे पोरे-पोर डँसले जा रहल हे
ई अमरित चुअइत गीत,
समुन्दर के जुआर-
देहिया के सुधिए भुला गेल हे;
जरूरे कउनो कन्हइया के धेयान धैले हे

लगऽ हे कोइली आउ पपीहा एक्के तुरी कुहुँक पड़ल हे;
इँजोरिया से लीपल आउ चंनन से पड़ोरल
ई मनबसिया राग
जिनगी के बीतल बात जगा देलक हे

हम सोच रहलूँ हे-
कन्हइया महाभारत करइत होतन
आउ राधा अप्पन भीतरी महाभारत;
दुन्नो के सारथी कन्हइए हथ

विधाता के सउँसे सृस्टि में
एक्के तान, एक्के राग-
देहिया के सुधे बिसर गेलूँ,
देखऽ ही, करील से लेके कदम तक टुसिया गेल हे;
महारास के धुन उठ रहल हे

बँसुरी बरस रहल हे,
मन छछन के अउना रहल हे,
कमदेउआ बान चढ़ा लेलक हे,
बसंत के पराग चू-चू के
सँउसे धरती भिंजैले हे

एकसरे घरवा में
करेजा कँकड़ी हो गेल हे,
अँखिया में मोती फुला गेल

जोगल पिरितिया पर
ठनका ठनकौले हे—
ई अधरतिया के बँसुरी

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. कनकन अधरतिया में बँसुरी काहे बज रहल हे?
2. जे बँसुरी बजा रहल हे, ऊ कउन हे?
3. कन्हैया आउ राधा के कउन काम बतावल गेल हे?
4. सउँसे धरती काहे भींजल हे?

लिखित :

1. कवयित्री के परिचय देइत उनकर रचना के नाम बतावऽ।
2. निरदइया केकरा कहल गेल हे?
3. 'अधरतिया के बँसुरी' के भाव बतावऽ।
4. लाल रंग कउन चीज के परतीक हे?
5. रसे-रसे, पोरे-पोर डँसले हे' से का समझऽ हऽ?

6. 'कन्हैया के धेयान धइले हे' ई इसरा केकरा-प्रति हे?

7. कमदेउआ केकरा पर बान चढ़उले हे?

8. करेजा कँकड़ी काहे हो गेल हे?

9. 'जोगल पिरितिया' के भाव बतावऽ।

10. 'कउन परदेसी हम्मर मन लाल रंग में डुबा रहल हे।' एकर भाव स्पस्ट करऽ?

11. नीचे लिखल पद्यांस के सप्रसंग व्याख्या करऽ :

(क) केकर नेहिया भुरा रहल हे,
केकर सनेहिया फुला रहले हे ?
ओह !

(ख) जोगल पिरितिया पर उनकर ठन कौले हे–ई अधरतिया के बँसुरी ।

12. कविता के भाव आउ सिल्प सौन्दर्य बतावऽ।

भासा-अध्ययन :

1. 'अधरतिया के बँसुरी' पाठ में कउन–कउन मुहावरा आयल हे। ओकरा चुन के लिखऽ आउ वाक्य में परयोग करऽ।

2. नीचे लिखल वाक्यांस के भाव स्पस्ट करऽ—

(क) नींद उपह गेल

(ख) चानो ढरक गेल

(ग) नेहिया जुड़ाइल हे

(घ) सनेहिया फुला रहल हे

(ङ) इँजोरिया से लीपल आउ चन्नन से परोड़ल मन बसिया राग

(च) करील से लेके कदम तक टुसिया गेल

3. 'रहस्यवाद' से का समझऽ हऽ? समझा के लिखऽ।

4. कविता में आयल अलंकार उदाहरण के साथ बतावऽ।

योग्यता विस्तार :

1. ई कविता से मिलइत जुलइत एगो कविता 'बेपीर बलम' राजेन्द्र कुमार यौधेय लिखलन हे। ई दुन्नो कविता के भाव में का अन्तर हे?

बेपीर बलम

'बंसी के रेघवा में जेत्ता हइ पीर रे,
बलमा के हिरदा हइ ओतने बेपीर रे।
जमुना के तीरवा से चलवऽ हइ तीर रे,
केत्ता बेमानी हाय ! अँखिया के नीर रे।
पिपरा के गछुली के पियर-पियर पात रे,
मरलो के मारइ हाय, ठरवा के रात रे।
झिंगुर बिपतिया में गावइ मालकोस रे,
झूठ ई जगत सउँसे केकरो न दोस रे।
अँधिया में खेर उड़ी लगऽ हइ उन्वास रे,
ठरवा के बिहनउकी हइ भुइयाँ कपास रे।
रह-रह चउल करऽ हइ केतना अतीत रे,
आजु भेलइ तीत केत जुग-जुग के मीत रे।
मनवा में टीस केत्ता गोरिया अधीर रे,
हथवा बन्हायल हइ गोरवा जंजीर रे।'

2. अधरतिया के बाँसुरी से मिलइत जुलइत कोई एगो कविता चुन के लावऽ आउ कलास में ओकरा पर तर्क-वितर्क करऽ।

सब्दार्थ :

छन्द	:	कविता के परकार, भेद
तपिस	:	रउदा के गरमी
मिझाना	:	बुताना
छछनना	:	तरसना
टुसियाना	:	नया कली
झुराना	:	पकना